RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-01
January-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

सार्थक और महत्वपूर्ण हस्तक्षेप की कहानियाँ

अजय कुमार

शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ल0 ना0 मि0 वि0, दरभंगा।

अपनी पूर्वनिर्मित सीमाओं का अतिक्रमण करके एक नई मूर्ति गढ़ने की कोशिश किस तरह सार्थक की जा सकती है इसे समझने के लिए हृदयेश की नई कहानियाँ एक अच्छे उदाहरण का काम दे सकती हैं। हृदयेश की ये कहानियाँ भी आमतौर पर छोटे शहर के लोगों की कहानियाँ ही हैं लेकिन इनमें एक बात अवश्य दिखाई देती है कि कई कहानियों में वह पशु–पक्षियों को अपनी कहानियों का केन्द्रीय चरित्र बनाते हैं और उनके माध्यम से संघर्ष, स्वतंत्रा और नई क्षमताओं के आश्वासन आदि के मुद्दों को उभारते हैं जो अपनी अंतिम परिणति में गंभीर मानवीय सरोकार बनकर हमारे सामने आते हैं, लेकिन पशु–पक्षियों की इन कहानियों में न तो कहीं वह जीवन की अमूर्त्तन की कोशिश करते हैं और न ही उसे नीतिकथा के स्तर पर उतारते दिखाई देते हैं। पशु–पक्षियों की कहानियों को मानवीय जीवन के आशयों से समृद्ध करके वह जीवन में सार्थक और महत्वपूर्ण करने के सुख का ही बखान करते है।

'जीवन–राग', 'तोते', 'अमरकथा' और 'उसकी कहानी' में केन्द्रीय पात्र बिल्ली, सांप, तोता, कबूतर और पुनः एक बिल्ला ही हैं लेकिन न तो हृदयेश महज स्वाद बदलने के लिए पशु–पक्षियों की कहानियों की ओर मुड़ते हैं और न ही वह जीवन की वास्तविकता से पलायन के लिए इसे एक शरण्य की तरह इस्तेमाल करते हैं। उनके यहां पशु–पक्षियों की कहानियाँ मानवीय तकाजों की कहानियाँ ही हैं। 'जीवन–राग' में बिल्ली और सांप का संघर्ष है, वह काली बिल्ली और सलेटी चितकबरा सांप अब भी दो जानलेवा दुशमनों की तरह आमने सामने डटे थे, किसी स्टिल सीन जैसे । समय जैसे कहीं ठहर गया था। सूरज की गिर रही रोशनी एक मजबूत फ्रेम के रूप में इस अद्भुत रोमांचक दृश्य को बांधे हुए थी।''[1] दोस्त और दुश्मन की पहचान असमर्थ अपने नवजात शिशुओं की रक्षा के लिए सन्नद्ध वह बिल्ली जिस तरह अपने शत्रु से संघर्ष करके अतंतः उसे समाप्त करने में सफल होती है, वह अपने अस्तित्व की लड़ाई के लिए मानवीय संघर्ष का उदाहरण बन जाता है। मानवीय संघर्ष की इस मूर्त्त और प्रत्यक्ष उपस्थिति को लेखक कदाचित बहुत मामूली मजदूरी पर ठेकेदार के लिए शहतीरों को किनारे पर खींचने वाले आदमी और औरत के संघर्ष के जरिए एक पूर्णता देना चाहता है। उनके अपने बच्चे भी न केवल उन्हें किये जाने वाले संघर्ष के लिए प्रेरणा देते हैं, अपनी सामर्थ्य–भर उस संघर्ष में सहयोग भी करते हैं। यह संघर्ष भी वस्तुतः जीवन–राग है जिसके अभाव में जीवन की कल्पना ही दुष्कर है लेकिन यहाँ सांप और बिल्ली के संघर्ष के समानांतर आदमी और नदी का संघर्ष अपने में अलग–थलग ही बना रहता है। कहानी में कोई ऐसा केन्द्रीय सूत्र नहीं जो अस्तित्व रक्षा के इन दो संघर्षों को एकसूत्रता दे सके। अपनी समानधर्मा इसी संग्रह की अन्य कहानियों से भिन्न इसमें कथातत्व को पूरी तरह से रेड्यूस करके स्थितियाँ ही केन्द्र में हैं और वे स्थितियाँ भी पारस्परिकता के सूत्र में गुंथे बिना एक–दूसरी के समानांतर ही बनी रहती हैं। न तो समरेश वसु की 'अकाल वर्षा' तथा 'नट और नटी' की तरह प्रत्यक्ष रूप में मानवीय संघर्ष और जिजीविषा को रेखांकित कर पाने की कोशिश यहां है और न अपनी ही अन्य कहानियों की तरह पशु–पक्षियों के संघर्ष को मानवीय संकेतों में ढाल सकने वाली सघनता और रचाव का बोध। संभवतः इसीलिए 'जीवन–राग' एक मुकम्मल कहानी की अपेक्षा स्थितियों को नीतिकथा के साँचे में ढालने की कोशिश का उदाहरण ही अधिक है।''[2]

'तोते' एक पक्षी की ही नहीं, मानवीय स्वतंत्रता को भी बहुत गहराई से रेखांकित करने वाली कहानी है। कहानी में तोता सिर्फ एक होकर भी एक नहीं है। अशर्फीलाल की जवान अल्हड़ पत्नी भी तोता है और पहाड़ी किशोर नौकर जीवन सिंह भी। पत्नी की उम्र और गुण–धर्म के प्रति उदासीन रहकर लगाई गई बंदिशें अंततः उसकी जान ले लेती है क्योंकि वे उसकी आबादी पर लगी ऐसी अप्रिय बाण जैसी है जो उसकी स्वाभाविक गति को बाधित करती हैं। शहर के बाहर खुले विस्तार और नदी को देखकर जीवन सिंह को अपने पहाड़ों का खुलापन बेहद सताने लगता है। सुरक्षा के लिए दुकान में बन्द रहकर जीने वाला जीवन उसे कैद जैसा लगने लगता है। कहानी के अशर्फीलाल यथास्थिति के प्रतीक बनकर सामने आते हैं। जो न पिंजड़े में पल रहे तोते की भावनाओं और इच्छा का अनुमान लगा पाते हैं और न ही पत्नी और नौकर की। अखबार में किसी देश के विद्रोह या तीसरी दुनिया के किसी देश के आजाद होने की खबर में उन्हें कोई दिलचस्पी भी नहीं होती। लेकिन उनकी प्रत्यक्ष उदासीनता के बावजूद परिवर्तन के संकेत कहानी में बड़ी कुशलता से बुने गए हैं। 'जीवन–राग' की तरह यहाँ तोता, पत्नी और नौकर को जोड़ने वाला सूत्र अनुपस्थित नहीं है, इसीलिए ये सबके सब–पक्षी और आदमी मिलकर–अपनी स्वतंत्रता के खलनायक लाला अशर्फीलाल के विरूद्ध संघर्ष में जीते और मरते हैं। ''सुबह हो गई थी। रोज जैसी नहीं, भिन्न। तोता बोल नहीं रहा था।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अशर्फीलाल बरामदे में आ गए। पिंजरे की एक तीली मुड़ी–टेढ़ी थी और बढ़ी हुई संध में से तोते की गर्दन बाहर निकली थी। किंचित फैले हुए पंख और मुड़ी हुई टांगों से ऐसा लग रहा था कि तोता पिंजरे को लेकर उड़ रहा है।''[3] पहले दोनों बार की तरह आज भी अशर्फीलाल इसे समझ पाने में असमर्थ रहते हैं कि ''सारी सुख–सुविधाओं और सुरक्षा के बीच तोते ने यों गर्दन फंसाकर अपनी जान क्यों दे दी।''[4]

'अमरकथा' कबूतरों की पीढियों के माध्यम से जीवन की समग्रता को आकर्षित करती है। इस कहानी में मनुष्य न होकर केवल पक्षी ही हैं–स्वच्छंद और पालतू कबूतरों के अतिरिक्त जंगल में पाये जाने वाले कितने ही पक्षी और बगुले। कहानी रूपक की शैली में नहीं है जिसके अंत में मानवीय संकेतों को आरोपित कर दिया जाता है। पूरी कहानी पक्षियों को लेकर चलती है। खासतौर से दो सद्यः जात कपोत शावकों को लेकर–लेकिन फिर भी उसके आशय पक्षी जगत से अधिक मानवीय संसार और आचरण की सीमा में आते हैं। कपोत दंपत्ति में सहयोग और पारस्परिकता का भाव, नयों में आत्मनिर्भता की प्रेरणा, सामर्थ्य की पहचान, युवापीढ़ी में जोखिम और खतरों से खेलने वाले साहस का रेखांकन आदि मुद्दों को कहानी पक्षी और पशु जगत के आचरण के बीच ही बड़े कलात्मक ढंग से संकेतित करती हैं। बगुला की कथित वैराग्य भावना के बावजूद मछली–चिंता, गीता के ज्ञान को यथास्थिति के समर्थन में प्रयोग की चतुराई आदि पक्षी जगत के सीमित संसार का अतिक्रमण करके समग्र मानवीय व्यवहार की हदों को छूता है। पालतु और स्वच्छंद कबूतरों का संवाद स्वंत्रता के मूल्य को रेखांकित करता है जिसमें महत्व सुरक्षा का नहीं, साहस और सामर्थ्य का है। छोटे कबूतरों और गुस्सेवर बंदर का प्रकरण युवा पीढ़ी को जोखिम उठाने और खतरों से खेलने की प्रवृति को उपहृत करता है। अपनी वीट से पौधा उगता देखकर नये जवान रहते कबूतरों को अपनी क्षमताओं और सामर्थ्य को पहचाने का सुख मिलता है। इस तरह कपोत शावकों की कहानी समूची मानव–जाति की अमरकथा में ढल जाती है। जिससे पल–पल यह ध्वनित होता चलता है कि जब मामूली कपोत शावक अपनी क्षमताओं, सामर्थ्य और उर्जा का इतना सार्थक इस्तेमाल करके सृष्टि के विकास में नये आयाम जोड़कर क्रम को सनातन बना सकते हैं तो फिर मनुष्य वैसा क्यों नहीं कर सकता? 'उसकी कहानी' का बिल्ला एक बार अपने संघर्ष–अस्तित्व–रक्षा और स्वतंत्रता के संघर्ष में मानवीय तकाजों की समृद्धि का बोध जगाता है। ''भूख के लिए शिकार करता हुआ वह बहुत खूबसूरत दिख रहा है।''[5] वह जानता है कि अपनी लड़ाई अंततः स्वयं ही लड़ी जाती है। कमरा खुलने की प्रतीक्षा और उसके परिणामस्वरूप स्वतंत्र हो जाने के संयोग को ज्यादा दूर तक खींचने की व्यर्थता को वह जल्दी ही समझ लेता है। गुस्सा और प्रतिशोध में कमरे की चीजों को नष्ट करके जैसे वह अपने अस्तित्व को ही प्रमाणित करना चाहता है। बंद कमरा उसके अपने अस्तित्व की लड़ाई के लिए धर्मक्षेत्र–कुरूक्षेत्र बन जाता है। ''उसका जिस्म रोशनदान को सत्ताच्युत करने के लिए एक हथियार बन गया था, एक पिघली हुई आग। नहीं, एक इच्छा, एक उद्देश्य, एक संकल्प।''[6] रोशनदान को तोड़कर बाहर आने पर लंगड़े और चेहरे पर जख्म वाले आदमियों को देखकर यह अहसास एक बार फिर उसे शिद्दत से होता है कि उनके इन जख्मों के पीछे भी कोई कहानी होगी, जैसे उसकी अपनी लंगड़ाहट,बाईं आँख के ऊपर जख्म का निशान और जिस्म के ऊपर कटी–फटी जिल्द के पीछे एक कहानी है–स्वतंत्रता के लिए किये गये एक गौरवपूर्ण संघर्ष की कहानी। अपनी थकान के कारण वह कुबरे बिल्ले की चुनौती की ढीठ मैना की जानलेवा हरकतों के प्रति उदासीन बना रहता है। अगले दिन के लिए उस सबको मुल्तबी करते हुए। ''बिल्ला गदरों में सिर छिपाकर सोने लगा। धूप उसे अपनी नरम अंगुलियों से सहला रही थी। कत्थई–भूरी चित्तियों से जगमग करता उसका जिस्म यों दीख रहा था जैसे वहाँ किसी गौरवमयी गाथा का एक गौरवमय पृष्ठ खुला पड़ा हो।''[7]

स्रोत–संदर्भ :–

1. 'हृदयेश की संपूर्ण कहानियाँ', (द्वितीय खंड/कहानी–'जीवन राग'),हृदयेश, भावना प्रकाशन, दिल्ली 2011, पृष्ठ 335
2. 'हिन्दी के प्रमुख कहानीकार', रामप्रसाद गोयल, संजय बुक स्टोर, बीकानेर, 2007, पृष्ठ 452
3. 'हृदयेश की संपूर्ण कहानियाँ',(द्वितीय खंड/कहानी–'तोते'), हृदयेश, भावना प्रकाशन दिल्ली 2011, पृष्ठ 423
4. वही
5. वही (कहानी–'उसकी कहानी'), पृष्ठ 410
6. वही, पृष्ठ 412
7. वही

© RRIJM 2015, All Rights Reserved